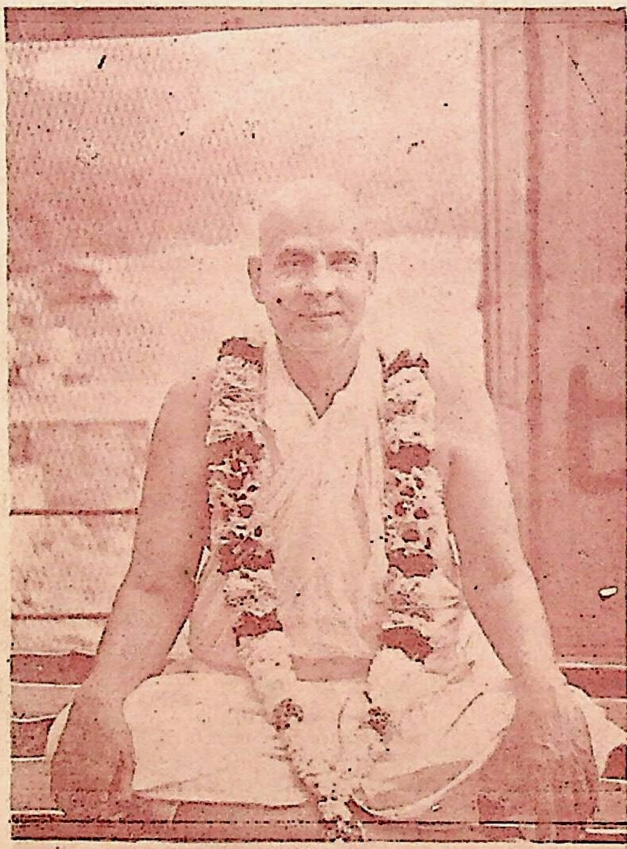
शिवानन्दचरितम्

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती



शिवानन्दचरितम्

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती



प्रकाशक
योग-वेदान्त आरण्य एकैडेमी
(दिव्य जीवन संघ)
पो० शिवानन्द नगर,
जिला टिहरी गढ़वाल, (यू० पी०) हिमालय

योग-वेदान्त आरण्य एकैडेमी (दिव्य जीवन संघ) के लिये श्री स्वामी कृष्णानन्द जी द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं द्वारा योग-वेदान्त आरण्य एकैडेमी प्रेस, शिवानन्द नगर, जिला टिहरी-गढ़वाल (यू. पी.) हिमालय में मुद्रित।

प्रथम संस्करण (हिन्दी) १९६३

प्रति १०००

मूल्य ५० नये पैसे
(डाकव्यय पृथक्)

मिलने का पता—
व्यवस्थापक, शिवानन्द प्रकाशन संस्थान,
दिव्य जीवन संघ,
पो० शिवानन्द नगर,
जिला टिहरी-गढ़वाल,
(यू. पी.)

9/14



Devabhashakavitabhaskara
SRI SWAMI JNANANANDA
Sivanandashram, Rishikesh.

9/14

प्रस्तावना

यह संसार अनादि है; परन्तु उसके साथ ही वह सान्त भी है। उसे कोई माया का कार्य मानता है तो कोई ईश्वर की लीला-विभूति के रूप में परिणामी सत्य। इसी प्रकार और भी अनेक मान्यतायें इसके सम्बन्ध में हैं जो कि दार्शनिकों की अपनी सूझ है किंतु वे सभी वैदिक अथवा आचार्यों के आधार पर अवलम्बित हैं।

संसार का स्वरूप भोग्य, भोगोपकरण और भोग्य स्थान आदि अनेक प्रकार का है तथा इसे जड़, अनेक, परिणामी, विरस आदि संज्ञायें दी जाती हैं। यह प्रत्यक्ष सिद्ध है। अतः इसके विपरीत इसके किसी भोक्ता, एक, चेतन, परिणामी, सरस होने का प्रमाण मिलता है।

वह है आत्मा। उसी के स्वरूप का कुछ परिचय इस श्रुति से मिलता है—'एको वशी सवभूतान्तरात्मा, सर्वभूताधिवासः। साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च, आत्मा यद्यपि सब का अपरोक्ष ही है पर मंल, विक्षेप और आवरण रूप अविद्या में अध्यस्त होने से परोक्ष-सा प्रतीत होने लगा है। उसकी सत् सत्ता से ही असत् भी सत् माना जाने लगा है।

आत्मा की कार्य और कारण रूप दो उपाधियां हैं जिन्हें अविद्या और माया भी कहते हैं। माया कारण उपाधि तथा अविद्या कार्य उपाधि है। कारण-उपाधि से ही अवतारवाद और कारक पुरुषों का भी होना माना गया है। ये अकर्म-तन्त्र होते हैं। इसके विपरीत कार्य-उपाधि कर्मतंत्र होता है। उसी को जीव कहते हैं।

हम अपने चरित्रनायक श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती को अवतारी तथा कारक पुरुष दोनों रूपों में देखते हैं; क्योंकि उनमें जो भी कार्य या गुण हैं वे असाधारण हैं।

किसी भी पुरुष का परिचय सर्वसाधारण को उसकी जीवनी से मिलता है। जीवन-चरित्र लेखक की यह अपनी विशेषता होती है कि वह जिस महापुरुष के जीवन चरित्र को लिखे, सर्वप्रथम वह अपने को उस महापुरुष की तादात्म्यता को प्राप्त करे तब उसके जीवन की सच्ची झलक अपने में प्रतिबिम्बित कर उसे लेखबद्ध करे।

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती ने श्रद्धेय स्वामी श्री शिवानन्द जी सरस्वती के संक्षिप्त जीवन परिचय को 'शिवानन्द चरितम्' नाम से संस्कृत में छन्दोबद्ध लिखकर एक अनुपम कार्य किया है। ज्ञानानन्द जी से अकस्मात् एक दिन एक संस्कृत पुस्तक 'अद्वैतामृत' के भाषानुवाद के सम्बन्ध में मेरी बातचीत हुई। उन दिनों मैं 'अद्वैतामृत' का ही भाषानुवाद कर रहा था। स्वामी जी ने 'शिवानन्द चरितम्' के भाषानुवाद करने की इच्छा व्यक्त की और मैंने इस कार्यभार को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

स्वामी जी ने 'शिवानन्द चरितम्' को दो भागों में लिखा है। प्रथम भाग में तो ६८ श्लोकों में जीवनी और दूसरे में ५२ श्लोकों में श्री गुरुदेव के गुण-कार्य और आकांक्षाओं का वर्णन है। प्रथम भाग अनुष्टुप छन्दों में तथा द्वितीय भाग एकाक्षरारम्भ प्रधान विविध छन्दों में लिखा गया है।

काव्य की दृष्टि से विचार करने पर इसमें काव्यगत वे सभी गुण हैं जो कि उसमें होने चाहिये। गुण, दोषा-

भाव, रीति, रस, अलंकार आदि का यथा-स्थान सन्निवेश है। श्लेष, अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि अलंकारों से काव्य की रोचकता बढ़ गई है। दार्शनिक विषय को तो बड़े ही सुन्दर ढंग से उसमें दर्शाया गया है। जैसे द्वितीय भाग का १२वां श्लोक 'ऐदम्पर्यमशेष'''आदि तथा ३३वां श्लोक 'थं लोकेषु विवर्धयन्तमनिशं···' आदि में इसकी पूर्ण झांकी मिलती है। पुस्तक के इसी भाग के तृतीय श्लोक 'इष्टानिष्ट मनोविकार रहितः' में अनुप्रास की क्या ही सुन्दर छटा का समावेश स्वामी जी ने किया है १४वें श्लोक 'औदार्य भक्तिविनयादि····'में रूपकालंकार से गुणोत्कर्षता का क्या ही सुन्दर मूर्त्त रूप दर्शाया गया है!

इन उपरोक्त यत्किंचित् उदाहरणों से यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में श्री स्वामी जी अपनी काव्य-रचना तथा तद्‌गत विशेषता के कारण प्राक्तन भारती, भवभूति माघ यहाँ तक कि कालिदास की तुलना में गिने जा सकते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि स्वामी जी के इस प्रयास से 'शिवानन्द चरितम्' के अध्येताओं को निश्चय ही ज्ञान, वैराग्य और भक्ति की त्रिवेणी-संगम पर आत्मनिष्ठा-स्नान का सुअवसर अवश्य प्राप्त होगा और चरित्र-नायक महापुरुष के जीवन-कार्य एवं गुण उनके प्रयास को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

पुण्डरीकाचार्य सा॰ यो॰ आचार्य,
वे॰ तथा शिक्षा शास्त्री,
आ॰ आदर्श श्री दर्शन महाविद्यालय
मुनि–की–रेती

योग वेदान्त

(हिन्दी मासिक पत्र)

वार्षिक चंदा : ३ रु० ७५ नये पैसे; एक प्रति ३५ न० पै०

यह पत्र शिवानन्द साहित्य का अनमोल रत्न है।

"योग वेदान्त आरण्य अकादमी" का मुख पत्र होने से इसमें सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, योग और वेदान्त विषयक सुबोधगम्य सामग्रीरहती है।

योग के जटिल अर्थ को साधारण जन समाज में सरल रीतियों से समझाने के लिए यह उत्तम माध्यम है। अपने पवित्र विचारों को लेकर यह पत्र नवीन आध्यात्मिक युग का शंख प्रघोषितकरता है।

इस पत्र में सर्व साधारण के लेखों को प्रकाशित नहीं किया जाता है। किन्तु अनुभव के आधार पर जो लेख लिखे गए हों और जिनके विचारों की पृष्ठभूमि ठोस और प्रामाणिक हो, ऐसे लेखों को ही इस पत्र में प्रकाशित किया जाता है। जीवनोपयोगी व्यावहारिक सिद्धान्त को प्रकट करने वाले लेख पत्र में अवश्य प्रकाशित किये जाते हैं।

यह पत्र किसी सम्प्रदाय विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करता, किन्तु विश्वात्म-भावना के उद्देश्य को अंगीकार कर, केवल उसी सिद्धान्त का हर रीति से प्रतिपादन करता है।

पता— व्यवस्थापक,

योग–वेदान्त (हिन्दी)

पो० शिवानन्द नगर वाया ऋषिकेश, (यू. पी.)

शिवानन्दचरितम्

दक्षिणे भारते रम्ये ताम्रपर्णीनदीतटे ।
राजते सर्वसस्याढ्यो ग्रामः पत्तमटाह्वयः ॥१

१- दक्षिण भारत में प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर ताम्रपर्णीनदी के पावन तट पर सब प्रकार के धन-धान्य से समृद्ध पत्तमडाई नामक एक ग्राम है ।

सर्वदा भारतीलक्ष्मीदिव्यताण्डवमण्डिते ।
मण्डलेऽस्मिन् शुभे पूर्वमासीदप्पय्यदीक्षितः ॥२

२- यह शुभ्र देश सदा ही प्राकृतिक सौन्दर्य की लीलास्थली तथा लक्ष्मी एवं सरस्वती देवी की रास भूमि रहा है । प्राचीन काल में यहां पर अप्पय दीक्षित नामक एक महापुरुष हुये ।

भक्तचूडामणिः सोऽयं देवभाषाविचक्षणः ।
ग्रन्थाननेकान् निर्माय लेभे सत्कविमुख्यताम् ॥३

३- ये अप्पय दीक्षित भगवद्भक्तों में प्रमुख तथा

संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। इन्होंने अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की जिससे इन्हें महाकवि की उपाधि मिली।

भक्तिज्ञानाकरे भव्ये तत्कुले परिपावने।
वेंगुशर्मसमाख्यातो भूसुरः समजायत ॥४

४— इन अप्पय दीक्षित के सुन्दर, पवित्र तथा भक्ति एवं ज्ञान से सम्पन्न कुल में वेंगु शर्मा नामक एक ब्राह्मण बालक ने जन्म लिया।

वेदमन्त्रपरिज्ञानशेवधिः स महीसुरः।
ववृधे भक्तिसम्पन्नः सुजनैरभिनन्दितः ॥५

५— ब्राह्मण कुमार वेंगु शर्मा बाल्यकाल से ही वेदों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों के ज्ञाता तथा भक्तिभाव से भरपूर थे। इससे वे सभी भद्र लोगों के प्रशंसापात्र बनकर शनैः शनैः बढ़ने लगे।

सौशील्यविनयोपेतां पार्वतीं नाम बालिकाम्।
शिवामिव शिवः काले शुभे परिणिनाय सः ॥६

६— शिव जी के समान गुणवान् वेंगु शर्मा जब वयस्क हुये तब एक मंगल दिन को उनका विवाह पार्वती जी के ही समान सुन्दर शील, विनय आदि गुणों वाली पार्वती नामक कन्या से हो गया।

सर्वमङ्गलसम्पूर्णा भक्तिसौशील्यशालिनी।
साऽभवत्तस्य विप्रस्य यथार्थसहधर्मिणी ॥७

७— उन वेंगु शर्मा की पत्नी पार्वती में भक्ति और

सुशीलता आदि सभी मांगलिक गुण विद्यमान् थे। अतः वे सही अर्थों में अपने पतिदेव की सहधर्मिणी थीं।

अत्यन्तनिर्मलात्मानौ मोक्षमार्गैककांक्षिणौ।
तौ दम्पती सदा कालं निन्यतुः पूतभावनौ ॥८

८– इस ब्राह्मण दम्पति का अन्तःकरण निर्मल तथा मन उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण था। वे केवल मोक्ष मार्ग के अभ्यास में ही अपना जीवन यापन करते थे।

तयोरादर्शदम्पत्योः कश्चिदुत्तमनन्दनः।
समभून्मंगले काले दिव्यमङ्गलविग्रहः ॥९

९– इस भांति वे अपना आदर्शस्वरूप दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रहे थे कि एक शुभ मुहूर्त में उनके घर में एक उत्तम शील स्वभाव तथा दिव्य शरीर वाले बालक का जन्म हुआ।

दिव्ये तस्मिन् सुते जाते पितरौ भाग्यशालिनौ।
आनन्दजलधौ मग्नावभूतां पूतमानसौ ॥१०

१०– इस दिव्य सन्तति के जन्म ग्रहण करने पर पूतमना भाग्यशाली माता-पिता आनन्द-सागर में निमग्न हो गये।

चिराचरितपुण्यस्य फलं नावीश्वरो ददौ।
इति तावभ्यमन्येतां दम्पती प्रीतचेतसौ ॥११

११– अपने घर में उस बालक के जन्म लेने से माता-पिता बहुत ही प्रसन्न हुये। उन्होंने यह समझा कि

अपने जीवन में सुदीर्घ काल तक हमने जो पुण्यार्जन किया है, उसी के फलस्वरूप भगवान् ने हमें यह सन्तान दी है।

ज्योतिश्शास्त्रविदस्तस्य जातकं वीक्ष्य शोभनम्।
ऊचुर्जगद्गुरुः सोऽयं भवेदिति सविस्मयाः ॥१२

१२– ज्योतिषियों ने जब शिशु के ग्रह-राशि को देखा तो उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने यह फलादेश बताया कि 'यह बालक तो भविष्य में जगद्गुरु होगा।'

प्रतिपच्चन्द्रतुल्योऽयं ववृधे कोमलार्भकः।
आह्लादयन् जनान् सर्वान् नानालीलाविचेष्टितैः ॥१३

१३– यह सुन्दर सुकुमार बालक अपनी बाल-सुलभ चेष्टाओं तथा लीलाओं द्वारा सभी लोगों के मन को प्रमुदित करता हुआ प्रतिपदा के चन्द्रमा की भांति शनैः शनैः बढ़ने लगा।

कुप्पुस्वामिसमाख्योऽसौ विद्यालयगतोऽर्भकः।
विद्यार्थिनः समस्तानप्यत्यशेत स्वमेधया ॥१४

१४– माता-पिता ने अपने उस प्रिय बालक का नाम कुप्पू स्वामी रक्खा। जब बालक कुप्पू स्वामी विद्याध्ययन के लिये विद्यालय गये तो वहां पर ये अपनी असाधारण प्रतिभा से विद्यालय के सभी विद्यार्थियों के अग्रणी बन गये।

सर्वकार्यपटुः सोऽयं कायव्यायामकर्मभिः।
सर्वेषामपि लोकानामकरोदद्भुतं परम्।१५

१५– वे सभी कार्यों में पूर्ण निष्णात थे। उन्होंने अपने शारीरिक व्यायामादि क्रियाओं से लोगों को आश्चर्य में डाल दिया।

सर्वास्वपि परीक्षासु जयं प्राप स बालकः।
ततो वैद्यपरीक्षार्थं त्रिश्चिनापुरमाययौ ॥१६

१६– बालक कुप्पू स्वामी प्रारम्भिक कक्षा की सभी परीक्षाओं को सफलता पूर्वक उत्तीर्ण कर त्रिचिनापल्ली नामक नगर में चिकित्सा-शास्त्र के अध्ययन के लिये गये।

तत्रापि विजयं प्राप्य सकलैरभिनन्दितः।
मलयाद्वीपमेषोऽगाद्वैद्यकर्मसमुत्सुकः ॥१७

१७– इन्होंने चिकित्सा-शास्त्र की परीक्षा विशेष योग्यता से उत्तीर्ण की, जिससे इन्हें प्रचुर सम्मान प्राप्त हुआ। अब चिकित्सा करने की प्रबल इच्छा से वे चिकित्सक के रूप में मलाया चले गये।

तत्र रोगार्तलोकानां सेवनं पूतभावनः।
सर्वदा सर्वदानोत्कः सोऽकरोत् करुणाकरः ॥१८

१८– मलाया पहुँचने पर इन्होंने सभी रोगियों की चिकित्सा व सेवा बड़ी ही पवित्र भावना से आरम्भ कर दी। इनके मन में दीन-दुखियों के प्रति बड़ी ही करुणा थी। ये रोगियों की सब प्रकार की सहायता सदा अपने पास से किया करते थे।

दारिद्र्यपीडितान् लोकानेष वैद्यपुरोगमः।
भूरिद्रविणदानेन सेवते स्म दयामयः ॥१९

१६– ये उस देश में एक बड़े ही लब्धप्रतिष्ठ डाक्टर बन गये। इनकी दया की सर्वत्र चर्चा होने लगी। ये निर्धन लोगों की सदा अपने पास से धन देकर खूब सहायता किया करते थे।

अचिरेण स सर्वेषां मलयाद्वीपवासिनाम्।
मनोभिः सह तद्रोगान् जहाराऽद्भुतचेष्टितः ॥२०

२०– इन्होंने मलाया के सभी निर्धन रोगियों का रोग निवारण किया और अपनी इस अद्भुत चिकित्सा-प्रणाली द्वारा शीघ्र ही उन लोगों के आकर्षण-केन्द्र बन गये।

सर्वानीश्वरभावेन जनान् सोऽयमवैक्षत।
तस्मादेषोऽभवत्तेषां निर्व्याजस्नेहभाजनम् ॥२१

२१– सब को ईश्वर का ही स्वरूप मान कर ये उनकी सेवा-सुश्रूषा किया करते थे। इससे ये उन लोगों के निःस्वार्थ प्रेमी बन गये।

अपूर्ववैद्यवीरोऽसावित्यूचुः सर्वमानवाः।
एवं प्रकीर्तितस्तत्र सोऽनयद्दशवत्सरान् ॥२२

२२– (इनकी कार्यकुशलता और इनका अनुपम प्रेम देखकर) वहां के सभी लोग यह कहा करते थे कि ये तो अपूर्व डाक्टर हैं। इस भांति उस देश में इनकी बड़ी ही ख्याति हो गई। वहां पर ये दस वर्ष तक रहे।

ततोऽयं विश्वसेवायामन्तरात्मप्रचोदितः।
सर्वस्वमपि सन्त्यज्य प्रययौ भारतावनिम् ॥२३

२३– (इस भांति सेवा भाव में रत रहते हुये) इनकी अन्तरात्मा की इन्हें यह प्रेरणा हुई कि अब तुम विश्व-सेवा कार्य में लग जाओ। बस इन्होंने उसी समय अपने (लौकिक सम्बन्धियों तथा शारीरिक सुख के साधन—वस्त्र, गृह आदि) सर्वस्व को त्याग कर भारत देश की ओर चल पड़े।

वाराणसीपुरं प्राप्य विश्वनाथं ददर्श सः।
तत्र कांश्चिद्दिनान् नेतुं धीरोऽयं विदधे मतिम् ॥२४

२४– (भारत की यात्रा करते हुये) वे वाराणसी पहुँचे। वहां पर इन्होंने भगवान् विश्वनाथ जी के दर्शन किये और इसी नगर में कुछ काल तक निवास करने का मन में निश्चय कर वहां रहने लगे।

चन्द्रशालां विहायासौ धर्मशालामुपागमत्।
मृदुशय्यामुपेक्ष्यायमत्र शेते स्म कुट्टिमे ॥२५

२५– अब इन कुप्पू स्वामी ने अपने उत्तम प्रासादों में रहना छोड़कर धर्मशालाओं में रहना तथा कोमल एवं बहुमूल्य गद्दे-रजाइयों के ओढ़ने बिछाने को त्याग कर भूमि तल पर सोना-बैठना आरम्भ कर दिया।

कूर्पासकं परित्यज्य स्वीकुर्वन्नर्धनग्नताम्।
यदृच्छालाभतुष्टोऽयं चचार विगतस्पृहः ॥२६

२६– कोट-कमीज़ आदि सुन्दर वस्त्र पहनने छोड़कर एक ही लम्बा वस्त्र पहनना आरम्भ कर दिया और जो कुछ मिल जाता उससे ही सन्तोष कर किसी लौकिक विशेष

वस्तु की कामना न करते हुये वाराणसी को छोड़ कर ये अन्य स्थानों में विचरण करने लगे।

ततः पावनभूभागसन्दर्शनसमुत्सुकः।
प्रस्थितोऽसौ विदूरस्थं महाराष्ट्रपदं ययौ ॥२७

२७– इस प्रकार भ्रमण करते हुये इन्हें और भी पवित्र भूभागों को देखने की इच्छा प्रतिदिन प्रबल होती गई तथा कुछ दिन बाद ये सुदूर महाराष्ट्र प्रदेश को चले गये।

तत्र कस्यचिदाढ्यस्य करुणाविष्टचेतसः।
वात्सल्यभाजनीभूतः सोऽवसत् साधुचेष्टितः ॥२८

२८– महाराष्ट्र पहुँचने पर ये एक उदार धनी के घर पर रहने लगे। अपने सद्व्यवहार तथा स्नेहमय स्वभाव के कारण ये उसके वात्सल्यभाजन बन गये।

दिव्यस्याऽस्याशयं सम्यग् ज्ञात्वा स नरसत्तमः।
हृषीकेशस्य माहात्म्यं सविस्तरमुपादिशत् ॥२९

२९– उन महाराष्ट्रीय सज्जन ने अपने अतिथि के दिव्य मनोभावों को भली भांति जानकर इन्हें ऋषिकेश के महात्म्य को विस्तार पूर्वक बतलाया।

ततः स कैश्चिद्दिवसैः पादचारेण सञ्चरन्।
विषह्य विविधक्लेशान् हृषीकेशमुपागमत् ॥३०

३०– (उन सेठ जी से ऋषिकेश की प्रशंसा सुनकर) ये पैदल ही वहां से चल पड़े और मार्ग में नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुये ऋषिकेश पहुँचे।

मन्दाकिनीतटे योगिवृन्दापूर्णे मनोहरे ।
धन्याशयजनाकीर्णे शून्याघे शुभदर्शने ॥३१
सुमानुषसमाराध्ये हिमालयनगावृते ।
'मुनिःकिरेती'त्याख्यातेस्थले वासमियेष सः ॥३२
(युग्मकम्)

३१, ३२– (ऋषिकेश पहुँचकर यहां के अनेक स्थानों को देखा और उनमें से) इन्होंने मुनि-की-रेती नामक स्थान अपने रहने के लिये चुना ; क्योंकि यह स्थान पावनी भागीरथी के रमणीय तट पर है, अनेक योगीजन यहां निवास करते हैं, यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य भी बड़ा ही मनोहर है, यहां के अधिकांश निवासी सात्त्विक भाव से सम्पन्न हैं और यह स्थान हिमालय पर्वत से आवृत है ।

गंगानदीतटे सोऽयं स्वर्गाश्रममवैक्षत ।
तत्र वासोचितां पुण्यां तपोभूमिमियाय सः ॥३३

३३– तब इन्होंने गंगा जी के दूसरे तट पर स्वर्गाश्रम को देखा और उस पुण्य तपोभूमि में कुछ काल तक निवास करने का निश्चय कर प्रथम वहीं रहने के लिये चले गये ।

संन्यासिनिवहश्रेष्ठं मान्यानां धुरि कीर्तितम् ।
विश्वानन्दसमाख्यातं ददर्श स महाशयम् ॥३४

३४– स्वर्गाश्रम के इनके निवास-काल में एक दिन इन्हें अकस्मात् श्री स्वामी विश्वानन्द जी के दर्शन हुये ।

श्री स्वामी (विश्वानन्द) जी सम्मान्य संन्यासियों में प्रमुख तथा बड़े ही उदार दृष्टिकोण के थे।

तमेवात्मगुरुं कर्तुं धन्योऽसौ विदधे मतिम्।
शिवानन्दाभिधानेन संन्यासित्वं ततोऽग्रहीत् ॥३५

३५– (उन महात्मा के दर्शन से प्रभावित होकर) कुप्पू स्वामी ने उन्हीं को अपना गुरु बनाने का निश्चय किया तथा उनसे संन्यास-दीक्षा लेकर अब ये शिवानन्द यति बन गये।

विश्वानन्दगुरोस्तस्मात् संन्यासिपददीक्षितः।
बभावसौ महादीपः प्रवृत्त इव दीपकात् ॥३६

३६– श्री स्वामी विश्वानन्द जी से संन्यास दीक्षा लेकर ये उसी प्रकार विभासित हो उठे जैसे एक तेजस्वी दीपक छोटे से दीपक से जलाये जाने पर दीप्तमान् हो उठता है।

सप्तसंवत्सरान् सोऽयं ब्रह्मध्यानपरायणः।
क्लेशान् विषह्य विविधान् तपस्तेपे दृढव्रतः ॥३७

३७– (संन्यास दीक्षा लेने के अनन्तर) स्वामी शिवानन्द जी ने अनेक विघ्नबाधाओं और कष्टों को सहन करते हुये बड़ी दृढ़ता के साथ सात वर्ष तक निरन्तर घोर तप किया और इसके साथ ही वे ब्रह्म-चिन्तन में भी निरत रहे।

तदनन्तरमार्तानां सेवने बद्धकंकणः।
कारुण्यपूर्णहृदयः सर्वदाऽसाववर्तत ॥३८

३८– इस प्रकार अपनी तपस्या पूर्ण करने के अनन्तर दयार्द्र हृदय स्वामी जी ने दीन-दुखियों की सेवा करने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया।

एकदा किमपि द्रव्यं कश्चिदस्मै मुदा ददौ।
तैरयं पत्रिकाजालं मुद्रयित्वा वितीर्णवान् ॥३९

३९– एक बार किसी व्यक्ति ने बड़ी प्रसन्नता से इन्हें कुछ धन भेंट किया। उस पैसे से इन्होंने कुछ परिपत्रक प्रकाशित कर जनता में वितरित किया।

सर्वसेवनतात्पर्यं प्रेमा ध्यानं तथैव च।
साक्षात्करणमित्येते तस्यासन् सहजा गुणाः ॥४०

४०– सेवा, प्रेम, ध्यान और ईश्वर-साक्षात्कार— इनके सहज गुण बन गये।

नानातीव्ररुजार्तानां दीनानां सेवनोत्सुकः।
मानातीतदयाविष्टो निनाय दिवसानयम् ॥४१

४१– अनेक रोगों से रुग्ण निर्धन जनता की बड़ी सहृदयता एवं तत्परता से सेवा में ये जीवन के शेष दिन व्यतीत करने लगे।

पुण्यमूर्तिरिति ख्यातिः समभूत्तस्य सर्वतः।
गण्ययोगिवरः सोऽभून्निर्णयातीतवैभवः ॥४२

४२– पुण्यमूर्त्ति और श्रेष्ठ योगी के रूप में इनकी कीर्ति सर्वत्र फैलने लगी तथा इनका लौकिक एवं दिव्य ऐश्वर्य भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगा।

मुद्रयित्वा यथाकालं लघुलेखा वितीर्य च ।
दिव्यजीवनतत्त्वानि सर्ववेद्यानि सोऽकरोत् ॥४३

४३— इन्होंने समय-समय पर छोटी-छोटी पुस्तकें तथा परिपत्रक प्रकाशित कर जनता में वितरित किये। इससे दिव्य जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान सर्वसुलभ हो गया।

कायमानसरोगाणामुन्मूलनसमुत्सुकः ।
शिवानन्दयतीन्द्रोऽभूद्दिव्यवैद्य इति श्रुतः ॥४४

४४— कायिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोगों के निवारण करने के कारण ये दिव्य चिकित्सक के रूप में शनैः शनैः प्रसिद्ध हो गये।

अज्ञानतिमिरान्धानां विज्ञानालोकदायकः ।
प्रज्ञाबलविलासेन सोऽभवद्विश्वविश्रुतः ॥४५

४५— इन यति ने अपने बुद्धि बल से संसारी जनों के अज्ञानान्धकार-जन्य अन्धेपन को अपनी ज्ञान-विभा से विदूरित कर दिया। इससे ये विश्वविख्यात हो गये।

आतुराणां चिकित्सार्थमातुरागारमप्ययम् ।
निर्ममे निर्ममो नित्यं कर्मयोगपरायणः ॥४६

४६— यद्यपि इन्हें किसी भी वस्तु में ममता नहीं है, फिर भी कर्मयोगी होने के नाते इन्होंने रोगियों की समुचित चिकित्सा के लिये चिकित्सालय भी बनवाये।

विश्वसेवाविधानाय शश्वदुन्मेषसंयुतः ।
विश्वभूतहितः सोऽदादाश्वासं सर्वजीविनाम् ॥४७

४७– इनमें सदा से ही विश्व की सेवा करने का अपूर्व उत्साह और विश्व-भूत हित—ये दो गुण ऐसे ठोस रूप में हैं जिनसे सब जीव आश्वस्त रहते हैं।

यदा तस्योपयोगार्थं लब्धं किञ्चित् स तत् स्वयम्।
गृहीत्वा साधुलोकेभ्यो ददाति स्म मुदाऽन्वितः ॥४८

४८– जब कभी भक्तगण इनके अपने उपयोग के लिये कुछ भी (अन्न, वस्त्र, फल, द्रव्यादि) इन्हें देते तो ये उनको लेकर बड़ी ही प्रसन्नता के साथ गरीबों को बांट देते थे।

औदार्यनिलयः सोऽयं श्रीदारपदलीनधीः।
खेदमुन्मूलयन् नृणां विदधे दीनसेवनम् ॥४९

४९– इनमें जितनी उदारता थी उतनी ही भगवान् के चरणों में दृढ़ अनुरक्ति भी। इन दोनों के बल से ही ये मानव-मात्र के दुःख दूर करने तथा दीनों की सेवा करने में ही अपने जीवन को लगाये रखते थे।

गण्ययोगिवरस्यास्य वर्ण्यशीलस्य वैभवात्।
पुण्येन सह सत्कीर्तिरवर्धत दिने दिने ॥५०

५०– अपने अवर्णनीय शील सम्पत्ति के कारण इन्होंने संन्यासियों में प्रमुख स्थान पा लिया और इससे पुण्य के साथ-साथ इनकी सत्कीर्ति भी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

साधुशीलस्ततो वाणीमाधुरीवैभवादयम्।
साधुसंघटनां कृत्वा प्रोद्दधार च तत्स्थितिम् ॥५१

५१– सदाचार तथा मधुर वाणी के कारण ये बहुत ही प्रसिद्ध हो गये। इन्होंने साधुओं का संगठन कर उनकी भौतिक तथा आध्यात्मिक स्थिति में एक बहुत ही क्रान्तिकारी रूपान्तर लाया।

स्वसुखं तृणवत्कृत्य साधूनां रोगिणां च सः।
शिवाय विदधे यत्नं दिवानिशमविश्रमम् ॥५२

५२– अपने शारीरिक सुख की रंच मात्र भी चिन्ता न करते हुये ये अहर्निश साधुओं और रोगियों की सेवा में ही संलग्न रहते थे।

ततो मानुषराशीनां सर्वलोकनिवासिनाम्।
शुभावहमहाकृत्यान्यारेभे स महाशयः ॥५३

५३– उदार हृदय इन सन्त ने विश्व के मानव-कल्याण के लिए इससे भी बढ़ कर अनेक शुभ कार्य करने आरम्भ कर दिए।

सर्वेऽपि सुखमुद्दिश्य सर्वकर्माणि कुर्वते।
सर्वान् नित्यसुखस्थानं नेतुं स विदधे श्रमम् ॥५४

५४– प्रत्येक व्यक्ति अपने सुख की प्राप्ति की कामना से ही नाना प्रकार के कार्यों में प्रवृत्त होता है। किन्तु इन महापुरुष ने तो प्राणिमात्र को नित्य-सुख के धाम को प्राप्त कराने के लिए अथक परिश्रम करना आरम्भ कर दिया।

पीयूषतुल्यवचनैर्भैषजैश्च दिवानिशम्।
रोगानुन्मूलयन् नृणां तोऽनयत् पुण्यजीवितम् ॥५५

५५– अब इन पुण्यात्मा सन्त ने अपनी अमृत तुल्य वाणी तथा औषधियों के अनेक प्रकार के उपचारों से रात-दिन लोगों के शारीरिक तथा मानसिक रोगों का उन्मूलन करना आरम्भ कर दिया।

दिव्यजीवनसन्देशकल्लोलास्सत्त्वसंश्रयाः ।
शिवानन्दाब्धिसञ्जाताः क्रमाद् व्यानशिरे दिशः ॥५६

५६– श्री स्वामी शिवानन्द जी मानो एक अगाध एवं अपार समुद्र हैं। दिव्य जीवन के सन्देश रूपी सात्त्विक लहरें इनसे निकल-निकल कर दिग्दिगान्तरों में फैल गईं।

धर्ममार्गोन्मुखान् लोकान् कर्तुं कृतमतिस्सदा ।
साक्षादीश्वरतुल्योऽयं चक्रे तीव्रपरिश्रमम् ॥५७

५७– भगवद्स्वरूप इन स्वामी जी ने संसार के सभी लोगों को धर्म-पथ पर लाने के सौम्य विचार से दिवारात्रि घोर परिश्रम करना आरम्भ कर दिया।

दिव्यजीवनसंघाख्यां नव्यसंस्थां महोदयाम् ।
रूपीचकार करुणारूपी सोऽयं महाशयः ॥५८

५८– दयासागर तथा उदारचेता इन महात्मा ने एक नवीन संस्था स्थापित की जिसका नाम इन्होंने दिव्य जीवन संघ रक्खा।

प्रधानकेन्द्रमेतस्य शिवानन्दाश्रमोऽभवत् ।
क्रमेण भुवि सर्वत्र संघोऽयं प्रथितोऽभवत् ॥५९

५९– दिव्य जीवन संघ का मुख्य केन्द्र शिवानन्द

आश्रम में ही स्थापित किया। धीरे-धीरे यह संघ विश्व-विख्यात हो गया।

ततो ववृधिरे शाखाः संघस्यास्य धरातले।
गंगाम्बूनीव ता नित्यं पुनन्ति जनसञ्चयम् ॥६०

६०– इस दिव्य जीवन संघ की शाखायें भूमण्डल में फैल कर जन-जन को इस प्रकार पवित्र करने लगीं जैसे पुण्यतोया सुरसरि का एक कण भी सबको पवित्र कर देता है।

सर्वेषां मततत्त्वानां सम्यग्बोधाप्तये नृणाम्।
शिवानन्दाश्रमे तेन मतसम्मेलनं कृतम् ॥६१

६१– सभी धर्मों के मूलभूत तत्त्वों का ठीक-ठीक ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को कराने के विचार से स्वामी शिवानन्द जी ने अपने आश्रम में एक विश्व धर्म सम्मेलन की भी आयोजना की।

अथासौ योगवेदान्तविद्याशालां निजाश्रमे।
नृणामभ्युदयाकाङ्क्षी समस्थापयदुन्नताम् ॥६२

६२– इसी प्रकार श्री स्वामी जी ने प्रत्येक मनुष्य के अभ्युदय को ध्यान में रखकर शिवानन्द नगर में 'योग-वेदान्त आरण्य अकादमी' नामक संस्था का भी संचालन शुरू कर दिया।

अद्भुतोत्पादकं योगप्रदर्शननिकेतनम्।
अयं मतिमतां मुख्यः स्थापयामास संयमी ॥६३

६३– इन प्रतिभा सम्पन्न संयमी महात्मा ने योग के विज्ञान के प्रसार की दृष्टि से 'योग-कौतुकालय' की भी स्थापना की।

भारतोर्वीतलं कृत्स्नं चरित्वाऽसौ महामुनिः।
सूक्तिपीयूषसन्दोहान् ववर्ष महिताशयः ॥६४

६४– इस भांति शिवानन्द आश्रम में इन संस्थाओं की स्थापना कर स्वामी जी महाराज ने अखिल भारत की एक ऐतिहासिक यात्रा की और अपने अमूल्य भजन, कीर्त्तन, व्याख्यान तथा उपदेश के द्वारा जनता के अज्ञान का निवारण अपने ज्ञान-पीयूष से किया।

श्रुत्वाऽस्य दिव्यतां नित्यं नानादेशनिवासिनः।
अस्यान्तिकमवाप्यैनं पूजयन्तीश्वरोपमम् ॥६५

६५– इस भांति इनकी अलौकिकता तथा दिव्यता की बातें सुनकर देश-देशांतर के लोग इनके पास आने लगे और इनके साक्षात् दर्शन कर इन्हें भगवान् के समान पूजने लगे।

भूलोकवासिभिः सर्वैराराध्योऽयं मुनीश्वरः।
अद्यानन्दकुटीरेऽस्मिन् हृषीकेशे विराजते ॥६६

६६– विश्ववन्द्य ये मुनिश्रेष्ठ आज भी आनन्द कुटीर, ऋषिकेश में निवास करते हुये विश्व-हित चिन्तन करते रहते हैं।

पुण्यमूर्तिमिमं दृष्ट्वा दिव्ययोगिगणेश्वरम्।
सफलीक्रियतां तूर्णं जनुर्मानुषराशिभिः ॥६७

६७– इन पुण्यमूर्त्ति योगिश्रेष्ठ भगवद्रूप श्री स्वामी शिवानन्द जी का दर्शन बड़े ही सौभाग्य की बात है। ऐ संसारी लोगो, शीघ्र आओ और इनके पावनकारी दर्शन से अपना मानव जीवन सार्थक करो।

यं दिव्यर्षिवरं चिरश्रुतिकृतव्यालोककौतूहला-
स्सन्द्रष्टुं बहुदूरतोऽपि नितरामायान्ति नानाजनाः।
यस्याऽस्याम्बुजनिस्सृतोक्तिलहरीमग्नाः प्रहर्षाद्भुत-
स्तब्धा यत्सविधे वसन्ति च शिवानन्दाय तस्मै नमः ॥६८

६८– जिन दिव्यर्षि शिवानन्द के दिव्य चरित्रों को सुनकर उनके दर्शन करने की उत्कट अभिलाषा से उत्साहित होकर सुदूर देशों से सहस्रों व्यक्ति प्रतिदिन उनके आश्रम में आते हैं और जिनके मुखारविन्द से निःसृत अविरल सूक्त-प्रवाह से चकित होकर जनता शान्त भाव से उनके सम्मुख बैठती तथा उनके दर्शन से अपने नेत्रों को तृप्त करती है, उन स्वामी शिवानन्द जी को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।

—:०:—

शिवानन्दस्तोत्राक्षरमाला

अस्तालस्यं नियमनिरतं वेदवेदान्ततत्त्व-
प्रस्तावोत्कं प्रथितयशसं प्रश्रयोल्लासिशीलम्
ध्वस्तातङ्कं विपुलहृदयं विश्वलोकाभिवन्द्यं
शस्ताभिख्यं शिवमुनिवरं भावये दिव्यरूपम् ॥१

१. जो आलस्य रहित हैं, अपने नियमों का नित्य ही नियमित रूप से पालन करते हैं, वेद-वेदान्त के सूक्ष्म तत्त्वों की व्याख्या करते हैं, भय तथा चिंता से सर्वथा मुक्त हैं, जिनका हृदय बड़ा ही विशाल है, विश्व के प्राणी जिनकी वन्दना करते हैं,— उन स्वामी शिवानन्द सरस्वती का मैं नित्य अपने अन्तःकरण में ध्यान करता हूँ।

आरुद्धेन्द्रियपञ्चकं प्रणिपतद्भक्तव्रजैरावृतं
चारुस्मेरमुखं सदा सकललोकाराध्यपादाम्बुजम्
वैरुध्यं महितोपदेशनिकरैरुन्मूलयन्तं नृणां
कारुण्याम्बुनिधिं शि ं शिवकरं योगीन्द्रमेवाश्रये ॥२

२. जिनकी समस्त इन्द्रियां विषयों से उपरत हैं, श्रद्धालु भक्तगण जिन्हें चारों ओर से घेरे रहते हैं, जिनके मुख-कमल पर सदा मन्द मुसकान छाई रहती है, जिनके चरणों की उपासना सभी लोग करते हैं, जो मनुष्य के अज्ञान को अपने सद्ज्ञानोपदेश से दूर करते हैं, बड़े दयालु और मंगल-मूर्ति हैं— मैं उन योगीन्द्र शिवानन्द की शरण ग्रहण करता हूँ।

इष्टानिष्टमनोविकाररहितः सौजन्यवारान्निधिः
कष्टाविष्टजनावनैकनिरतः संसाररोगापहः
दृष्टादृष्टफलप्रदाननिपुणो भूयिष्ठभूमोदयः
शिष्टाभिष्टुतवैभवः शिवमुनिर्मां पातु पूताशयः ॥३

३. जिनमें भले और बुरे मनोविकार नहीं हैं, जो सुजनता के सागर हैं, जो दुःखी मानवों के कष्ट दूर करने में सदा निरत रहते हैं, जो भव-रोग के निवारण तथा दृष्ट और अदृष्ट दोनों प्रकार के फल देने में समर्थ हैं, जिनकी ख्याति भूमण्डल में फैली हुई है, सज्जन तथा महापुरुष जिनके वैभव का वर्णन करते हैं, जिनका अन्तःकरण अत्यन्त पवित्र है— वे शिवानन्द मुनि मेरी रक्षा करें !

ईशाराधनलब्धसर्वविभवो दिव्यप्रभावोज्ज्वलः
क्लेशावेशवशंवदाखिलजनत्राता कृपासागरः
आशाबन्धविवर्जितः शिवमुनिर्मद्देशिको मानसा-
काशालोकितदिव्यधामपटलः पायादपायादिमम् ॥४

४. भगवदाराधन से जिनको सब ऐश्वर्य प्राप्त हो चुके हैं, जो दिव्य प्रभा से विभासित हैं, दुःखी मानव की जो रक्षा करते हैं, जो कृपा के सागर हैं, जो सब प्रकार की आशा एवं तृष्णा से विमुक्त हैं, अन्तर्ज्योति से जिसकी आत्मा प्रकाशित हो चुकी है— वे मेरे गुरु शिवानन्द अनादि अज्ञान और तज्जन्य कार्यों से मेरी रक्षा करें !

उत्कृष्टाशयपूर्णलेखनगणैर्निश्शेषलोकान् सदा
सत्कृत्योत्करतत्परानविरतं कर्तुं कृतातिश्रमः

सत्कृष्टिप्रवराभिनन्दितमतिर्दिव्यर्षिवर्यः सतां
सत्कृत्यात्तकुतूहलः शिवमुनिः क्षेमंकरः पातु माम् ॥५

५. जो उदात्त भावों से पूर्ण अपने लेखों द्वारा मानवता को भला बनने और भलाई करने की शिक्षा देने का निरन्तर अथक श्रम करते रहते हैं, जिनकी बौद्धिक क्षमता की संसार के बड़े-बड़े विद्वान् एवं दार्शनिकगण अभिनन्दन करते हैं, जो सबों का आदर-सत्कार करने को सदा समुत्सुक रहते हैं—वे शिवानन्द स्वामी मेरी रक्षा करें !

ऊढस्थेमप्रकटकरुणापूरपूर्णावलोकं
गाढज्योतिःस्फुरितवपुषं पूर्णपुण्यस्वरूपम्
श्राढध्यानप्रगुणितमहायोगसिद्धिप्रकर्षं
प्रौढर्षीन्द्रं शिवमविरतं भावये दिव्यरूपम् ॥६

६. जो सबों की ओर करुणापूर्ण स्थिर दृष्टि से देखते हैं, जिनकी मुख-मुद्रा पर आत्मज्योति की विभा स्पष्ट झलक रही है, जो पूर्ण पुण्य रूप हैं, ईश्वर का नित्य ध्यान करने से जिनको अनेकों यौगिक सिद्धियां प्राप्त हैं, प्रौढ़ ऋषियों के भी जो आचार्य हैं—उन दिव्य रूप शिवानन्द योगी का मैं ध्यान करता हूँ ।

ऋक्षाधीशप्रतिमवदनप्रोल्लसन्मन्दहासं
प्रेक्षावद्भिः सुजननिवहैः स्तूयमानापदानम्
अक्षामश्रीभरितमकलङ्काशयं ब्रह्मनिष्ठं
शिक्षादक्षं शिवमुनिवरं सर्वदा भावयेऽहम् ॥७

७. जिनके मुखचन्द्र पर मन्द-मुसकान की अलौकिक छटा सदा विद्यमान् रहती है, जिनका दर्शन कर लोग

उनके प्रशस्त कर्मों की प्रशंसा करते नहीं थकते, जिनका अन्तःकरण पवित्र है, जो पूर्ण ब्रह्मनिष्ठ हैं, सभी साधकों को उपदेश करने में समर्थ हैं—उन मुनिवर स्वामी शिवानन्द का मैं ध्यान करता हूँ।

ऋशालिनं शिवकरं शरणागताना-
मीशानभक्तमनवद्यगुणाभिरामम्
आशानुकूलफलदायकमाश्रितानां
क्लेशापहं शिवमुनीश्वरमाश्रयेऽहम् ॥८

८. जो अपने शरणागतों के कल्याणकारी हैं, भगवान् शिव के भक्त हैं, सद्गुणों से विभूषित हैं, अपने आश्रितों को उनकी आशा के अनुरूप फल प्रदान करते तथा उनके क्लेशों का निवारण करते हैं—उन मुनिश्रेष्ठ शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

नृपालपरिपूजितं प्रणतशिष्यवृन्दावृतं
कृपालुमृषिसत्तमं सुकृतिलोकसंसेवितम्
अपारमहिमार्णवं भवरुजार्तरक्षापरं
क्षपाकरसमाननं शिवमुनीद्रमेत्राश्रये ॥९

९. जो राजाओं के भी पूज्य हैं, जिन्हें शिष्यगण विनम्र भाव से सदा घेरे रहते हैं, जो दयालु तथा तत्त्वद्रष्टा हैं, जिनकी पुण्यशालीजन सेवा करते हैं, जो अपार महिमा के समुद्र हैं, भव-रोग से संतप्त लोगों की जो रक्षा करते हैं, जिनका मुख चन्द्रमा के समान कमनीय है—उन मुनिवर शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

लूंसेवनैकनिरतं विरताशमायैं-
स्संसेवितं शमधनं महनीयशीलम्
आसेदिवांसमतिमान्यपदं कृपालुं
संसाररोगशमनं शिवमाश्रयेऽहम् ॥१०

१०. जो भगवान् शिव की आराधना में सदा निरत रहते हैं, मिथ्या आशा तथा दम्भ से मुक्त हैं, सज्जनगण जिनकी सेवा करते हैं, शम जिनका धन है, जिनका आचरण अनुकरणीय है, जिन्हें प्रचुर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त है, जिनका हृदय कृपा-वारि से संसिक्त है—उन शिव तुल्य स्वामी शिवानन्द जी की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

एकावलम्बमखिलाश्रितजीवभाजां
शोकापनोदनपरं शरणागतानाम्
श्रीकान्तमग्नहृदयं शिवमेव भास्व-
त्तीकाशरोचिषमहर्निशमाश्रयेऽहम् ॥११

११. जो सभी आश्रित प्राणियों के एकमात्र अवलम्ब हैं, शरणागतों के सदा शोक हरने वाले हैं, जिनका मन लक्ष्मीपति में सदा लीन रहता है, जो बाल-रवि के समान दीप्तिमान् हैं—उन स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

ऐदम्पर्यमशेषनैगमगिरां लोकान् समुद्बोधयन्
मोदं सर्वजनेषु मञ्जुवचनैरश्रान्तमुत्पादयन्
सादं जीवितजन्यजं प्रतिदिनं नृणां समुन्मूलयन्
नादब्रह्मरसानुभूतिरसिकः श्रीमान् शिवः पातु माम् ॥१२

१२. सत्शास्त्रों की व्याख्या द्वारा जो लोगों को भगवान् के प्रति सदा उद्बोधित करते रहते हैं, जिन्होंने अपने वचनामृत के अविरल प्रवाह से सभी को प्रसन्न कर रक्खा है, प्रत्येक व्यक्ति के जन्म-मरणादि के दुःख को जिन्होंने दूर कर दिया है, जो ब्रह्म में पूर्णतः अवस्थित हैं—वे स्वामी शिवानन्द जी मेरी रक्षा करें !

ओंकारार्थमुदीरयन्तमनिशं निश्शेषमोहापहं
शंकाहीनमकल्मषं जनगणक्षेमाय कर्मोत्सुकम्
पंकापेतपथं समस्तमनुजान् सन्दर्शयन्तं सदा
तं कामारिनिषेवणैकनिरतं वन्दे शिवं योगिनम् ॥१३

१३. जो ओंकार पद की व्याख्या द्वारा लोगों के सभी प्रकार के शोक-मोह को सदा दूर करते रहते हैं, जो शंका रहित तथा निष्कलंक हैं, लोक-कल्याणकारी कार्यों के सम्पादन में सदा संलग्न रहते हैं, सांसारिक व्यक्तियों को सदा सन्मार्ग बताया करते हैं—उन भगवान् शिव के परम उपासक शिवानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

औदार्यभक्तिविनयादिगुणोत्कराणां
केदारमद्भुतचरित्रममोघवाचम्
श्रीदारभक्तमभिनन्द्यमतिप्रकर्षं
मोदाकरं शिवमुनीन्द्रमुपाश्रयेऽहम् ॥१४

१४. जो उदारता, भक्ति, विनम्रता आदि अनेक उत्तम गुणों की उर्वरा भूमि हैं, जिनका चरित्र अद्भुत एवं अलौकिक है, जिनकी वाणी अमोघ है, जो लक्ष्मीपति के परम भक्त हैं, जिनकी बुद्धि निर्मल तथा प्रखर है, जो

मोदप्रिय हैं—उन मुनिश्रेष्ठ स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

अंकागताखिलनृणां विनयानतानां
पंकापनोदनपरं यमिनां वरेण्यम्
शंकाविनाशनपटुं शिवमप्रमेयं
तं कार्यवेदिनमहं शरणं प्रपद्ये ॥१५

१५. अपनी गोद में विनीत भाव से आये हुये सम्पूर्ण मनुष्यों के पापों को जो दूर कर देते हैं, संन्यासियों में जो श्रेष्ठ हैं, सभी प्रकार की शंकाओं के समाधान करने में जो कुशल हैं, जिनके बल, बुद्धि, विद्या आदि की कोई समता नहीं—ऐसे कार्यकुशल स्वामी शिवानन्द जी की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

अःप्रत्यग्रपयोदमेचकतनुर्मां पातु माजानिरि-
त्यप्रत्यूहमहर्निशं मधुरिपुध्यानैकतानाशयः
सुप्रस्तावविशारदः शिवमुनिः श्रीमान् जगद्देशिकः
क्षिप्रध्वस्तसमस्ततापनिवहः पायादपायादिमम् ॥१६

१६. जिनका शरीर नव-नीरद के समान सुन्दर एवं आकर्षक है, जो लक्ष्मीपति के ध्यान, पूजन तथा चिन्तन में नित्य अबाध गति से संलग्न रहते हैं, जो अच्छी-अच्छी कल्पनाओं के करने वाले हैं, जगद्गुरु तथा सभी पापराशि को शीघ्र ही नष्ट करने वाले हैं—वे शिवानन्द मुनीन्द्र अपाय से मेरी रक्षा करें!

कल्याणकर्मनिरतं विरतस्पृहं नि-
स्तुल्यात्मबोधमनहंकृतिमत्युदारम्

काल्यार्कतुल्यमहसं महितानुभावम्
कल्याशयं शिवमहर्निशमाश्रयेऽहम् ।। १७

१७. जो कल्याणकारी कर्मों को करते हैं, निःस्पृह हैं, अतुलित आत्मबोध स्वरूप हैं, जिनमें अहं भाव का लेश भी नहीं है, जिनका स्वभाव बहुत ही उदार है, प्रातःकालीन सूर्य के समान जिनकी कांति है, जिनके अनुभाव पूज्य तथा आशय प्रशस्त एवं अभिनव हैं--उन स्वामी शिवानन्द की मैं अहर्निश शरण ग्रहण करता हूँ।

खरकरसमभासं खण्डितातङ्कजालं
पुरहरपदपद्मध्याननिर्लीनचित्तम्
नरगणगुणमार्गान् सन्ततं चिन्तयन्तं
सुरगुरुसदृशं तं श्रीशिवानन्दमीडे ।।१८

१८. तीक्ष्ण किरणों वाले सूर्य के समान जिनकी आभा है, जो सम्पूर्ण भयों को विध्वंस करने वाले हैं, जिनका मन-मधुप भगवान् के पाद-पद्मों में सदा लीन रहता है, जो लोगों के लिये कल्याणकारी सरलतम आध्यात्मिक पथ की सदैव खोज किया करते हैं--बृहस्पति के समान उन स्वामी शिवानन्द की मैं स्तुति करता हूँ।

गलत्सूक्तिपीयूषमानन्दरूपं
मिलद्भक्तलोकं सदालोकनीयम्
अलंघ्यप्रभावं जगद्देशिकं तं
ज्वलद्दिव्यदीप्तिं शिवानन्दमीडे ।।१९

१९. जिनके मुखारविंद से सूक्ति-सुधा का निर्झर नित्य प्रवाहित होता रहता है, जो आनन्दस्वरूप हैं, श्रद्धालु

भक्त जिन्हें सदा घेरे रहते हैं, जिनका दिव्य रूप दर्शन करने योग्य है, जिनका प्रभाव अपरिमेय है, जो दिव्य ज्योति रूप हैं--उन जगद्गुरु स्वामी शिवानन्द की मैं स्तुति करता हूँ।

घनकुतुकमजस्रं वर्धयन्तं जनाना-
मनवधिशुभमार्गानन्वहं दर्शयन्तम्
अनघमपगताशं छिन्नसंसारपाशं
मनसि शिवमुनीन्द्रं भावये भव्यशीलम् ॥२०

२०. जो प्रतिदिन मनुष्यों के असीम आनन्द का संवर्धन करते तथा उन्हें सन्मार्ग बतलाते हैं, जो निष्पाप हैं, आशा रहित हैं, जिन्होंने संसार-पाश को ध्वस्त कर डाला है—ऐसे मुनीन्द्र शिवानन्द की मैं मन में भावना करता हूँ।

ङश्यामलतनुं कृष्णं पश्यन् चेतसि सर्वदा
विश्ववन्द्यः शिवः पायाच्छुश्वन्मां मुनिपुङ्गवः ॥२१

२१. जो अपने विशुद्ध अन्तःकरण में श्यामल मूर्ति भगवान् कृष्ण के सदा दर्शन करते रहते हैं, जो विश्ववंद्य हैं, मुनिपुंगव हैं--वे शिवानन्द स्वामी मेरी रक्षा करें!

चरणारविन्दपतितार्तिहारिणं
करुणापयोधिमभिवन्द्ययोगिनम्
शरणागतावनपरायणं शिवं
स्मरणीयदिव्यचरितं समाश्रये ॥२२

२२. अपने चरणारविंद में पड़े हुये दीन-दुखियों के जो दुःख दूर करते हैं, जो दयासागर हैं, वन्दनीय हैं तथा शरणागतों के प्रतिपालक हैं, जिनका दिव्य चरित्र स्मरणीय है---उन स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

छलहीनमानसममेयवैभवं
विलसन्मुखाम्बुजविनिर्गलत्स्मितम्
जलशायिनामजपलालसं शिवं
कलयामि सद्गुरुवरं मुनीश्वरम् ॥२३

२३. जिनका मन निष्कपट है, वैभव जिनका अपार है, जिनके देदीप्यमान् मुख-कमल पर मन्द-मुसकान की दिव्य छटा सदा नृत्य करती रहती है, जो क्षीरसागर में शयन करने वाले नारायण के अजपाजप में सदा तन्मय रहते हैं, ऐसे मुनिश्रेष्ठ सद्गुरु स्वामी शिवानन्द जी का मैं ध्यान करता हूँ।

जगदीशमग्नहृदयं जगद्गुरुं
विगताशमार्यमुनिमण्डलेश्वरम्
निगमान्तबोधनिलयं कृपामयं
सुगतोपमं शिवमजस्रमाश्रये ॥२४

२४. जगदीश्वर के ध्यान में ही जिनका हृदय निमग्न रहता है, जो जगत् के गुरु हैं, जिनकी कामनायें समाप्त हो चुकी हैं, जो पूज्य हैं, मुनिमण्डलेश्वर हैं, जो वेद-शास्त्र के ज्ञान के आगार हैं, बुद्ध के समान करुणापूर्ण हैं---उन स्वामी शिवानन्द की मैं निरन्तर शरण ग्रहण करता हूँ।

झटिति घटयतां मे भावुकं भावनीयः
कुटिलमतिदुरापः प्रेक्षणापास्तपापः
निटिलनयनभक्तः श्रीशिवानन्दयोगी
जटिलयमिवरेण्यैस्सर्वथा माननीयः ॥२५

२५. जो दुष्टजनों से सदा दूर रहते हैं, अपनी दृष्टि-पात से जो पाप-राशि को दूर करने में समर्थ हैं, जो त्रिनेत्रधारी भगवान् शिव के भक्त हैं, जटिल तपस्वी भी जिनका सम्मान करते हैं, ऐसे माननीय योगी शिवानन्द शीघ्र मेरा कल्याण करें !

अभेदिनं षड्रिपूणामिभाननिषेवकम्
शुभेच्छं शिवमाराध्यममभेदधियमाश्रये ॥२६

२६. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान और ईर्ष्या रूप छः शत्रुओं पर जिसने विजय पा ली है, जो पूर्ण श्रद्धा एवं एकाग्र चित्त से गणेश जी की नित्य पूजा, उपासना किया करते हैं, जिनके विचार कल्याणकारी एवं पवित्र हैं—मैं उन आराध्य देव शिवानन्द जी की शरण ग्रहण करता हूँ।

टीकामहे शिवमवर्ण्यगुणाम्बुराशिं
शोकापनोदनपरं जनसञ्चयानाम्
आकांक्षितप्रदमशेषनृणां विवस्व-
न्नीकाशरोचिषममेयविचोविलासम् ॥२७

२७. जो अवर्णनीय सद्गुणों के सागर हैं, मानव जाति के शोक एवं कष्ट का उन्मूलन करते हैं, सभी लोगों को उनके मनोभिलषित फल प्रदान करते हैं, सूर्य के समान

तेजस्वी हैं, अनुपम विचार-तरंग वाले हैं--ऐसे स्वामी शिवानन्द मेरे उपास्य हैं।

ठाराधनैकनिरतं विविधागमानां
सारावबोधनपटुं मुनिमण्डलेन्द्रम्
वाराशिराशिरशनाशनिपाणिमुख्यै-
र्नीराजितांघ्रियुगलं शिवामाश्रयेऽहम् ॥२८

२८. जो शिव की आराधना में नित्य निरत हैं, अनेक आगमों के सार समझाने में निपुण हैं, मुनिगणों में मान्य हैं, समुद्र पर्यन्त शासन करने वाले राजाओं के लिये भी जिनके युगल चरण कमल पूज्य हैं--उन स्वामी शिवानन्द जी की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

डंभादिदोषरहितं महितर्प्रिमुख्यै-
रसंभावनीयमभिनन्द्यगुणाभिरामम्
जंभारिसोदरकृपामृतपूर्णपात्रं
तं भावये शिवमवर्ण्यमहोविलासम् ॥२६

२६. जो दम्भ आदि दोषों से मुक्त हैं, बड़े-बड़े सम्मान्य एवं सम्भ्रांत जन जिनकी पूजा करते हैं, श्लाघ्य गुणों के जो आगार हैं, जिन्हें नारायण का कृपा-रूपी अमृत प्राप्त है, जिनका तेज अनिर्वचनीय है, उन शिवानन्द की मैं मन में भावना करता हूँ।

ढक्कादिवाद्यरवतोषितभूतनाथं
सत्कारकर्मनिरतं निकटागतानाम्

सत्कार्यवेदिनमनाथजनावलम्बं
चित्कायचिन्तनरतं शिवमाश्रयेऽहम् ॥३०

३०. ढक्का नामक बाजे को बजा कर उसके शब्द से जिन्होंने भूतनाथ को प्रसन्न कर लिया है, जो अपने पास आये हुये लोगों के सत्कार की विधि को भली भांति जानते हैं, सत्कर्म के रहस्य से भी जो सुपरिचित हैं, अनाथ जनों के अवलम्ब हैं, चिद्रूप आत्मा के चिन्तन में जो सदा लगे रहते हैं, उन शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

णध्यानतत्परमनश्वरशर्मपद्मा-
निध्यानबद्धमनसं यतिलोकवर्यम्
अध्यात्मबोधनिलयं शिवमार्तरक्षा-
विध्यात्तपाटवमहर्निशमाश्रयेऽहम् ॥३१

३१. जो शिव जी की आराधना में तत्पर हैं, अविनाशी पद को प्राप्त कराने वाले मार्ग की खोज में सदा संलग्न रहते हैं, संन्यासियों में सर्वोत्तम हैं, अध्यात्म ज्ञान के आगार हैं, आर्तों की रक्षा में जो कुशल हैं—उन शिवानन्द की मैं अहर्निश शरण ग्रहण करता हूँ।

तापान्धकारदिवसेश्वरमाश्रितानां
पापापहं परमभक्तजनाग्रगण्यम्
आपादितात्मबलमप्रतिमप्रभावं
कोपादिहीनमनिशं शिवमाश्रयेऽहम् ॥३२

३२. जो ताप-रूपी अन्धकार को दूर करने के लिये ज्ञान-रूपी भास्कर हैं, आश्रय ग्रहण करने वालों के पापों

को दूर करने वाले हैं, परम भक्तजनों के नेता हैं, आत्म-बल को प्राप्त कर चुके हैं, जिनकी महत्ता अप्रतिभ है, जो क्रोधादि दुर्गुणों से मुक्त हैं—उन स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

थं लोकेषु विवर्धयन्तमनिशं वेदान्ततत्त्वोक्तिभिः
सालोक्योत्सुकतां समस्तमनुजेष्वुत्पादयन्तं विभुम्
आलोकैश्शिशिरीकृताखिलजनं विश्वाभिवन्द्यं शिवं
कालोन्माथिनिषेवणैकनिरतं योगीन्द्रमेवाऽऽश्रये ॥३३

३३. वेदान्त के उपदेशों से जिन्होंने लोगों के हृदयों में सालोक्य मुक्ति की उत्सुकता को बढ़ा कर उनको यह समझा दिया है कि समस्त विश्व में एक ही व्यापक चेतन है, जो अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से सबके मन को मोहित कर लेते हैं, काल के भी नियामक नारायण की जो नित्य उपासना करते हैं, उन विश्ववन्द्य योगीन्द्र शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

दीनत्राणपरायणं जनगणक्षेमाय कर्मोत्सुकं
पीनश्रीपरिवेष्टितं परिणतप्रज्ञं प्रसन्नाननम्
आनम्राखिललोकशोकनिकरध्वान्तांशुमन्तं नृणा-
मानन्दं जनयन्तमुज्ज्वलमहोराशिं शिवं भावये ॥३४

३४. जो दीनों की रक्षा में सदा तत्पर हैं, लोकसंग्रहार्थ कर्म में निरन्तर संलग्न रहते हैं, समस्त सम्पदाओं से सम्पन्न हैं, जिनकी बुद्धि परिपक्व है, जो सदा प्रसन्न वदन रहते हैं, प्रपन्नों के शोक समूह को ध्वस्त करने में जो सूर्य के

समान हैं, सब को आनन्ददायी हैं, उन प्रोज्ज्वल प्रकाश स्वरूप शिवानन्द की मैं अपने मन में भावना करता हूँ।

धन्याशयं शमधनं शमलप्रहीण-
मन्यायकर्मविमुखं विनयाभिरामम्
मान्याग्रगण्यमनवद्यगुणाम्बुराशिं
मन्यामहे शिवमुनीन्द्रमुदारशीलम् ॥३५

३५. जिनका आशय स्तुत्य है, शम जिनकी सम्पत्ति है, जो पाप रहित हैं, अविहित कर्मों से सदा परांगमुख रहते हैं, विनयशील हैं, पूज्यनीयों में अग्रणी हैं, सद्गुणों के सागर हैं, उन उदारशील स्वामी शिवानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

नानालोकसमीडितं सुमनसामग्रेसरं श्रीकरं
मानातीतगुणाकरं मुनिवरं कारुण्यवाराकरम्
पीनानन्दकरं भवामयहरं कालारिसेवापरं
दीनार्तिप्रकरप्रणाशनपरं वन्दे शिवं देशिकम् ॥३६

३६. अनेक लोग जिनकी स्तुति करते हैं, विद्वानों के जो आग्रणी हैं, शुभकारी हैं, अमित गुणों के खजाने हैं, मुनियों में श्रेष्ठ हैं, करुणा के सागर हैं, आनन्दकारी हैं, कालजयी भगवान् की सेवा में तत्पर रहने वाले हैं, दीन-दुखियों की पीड़ा को दूर करने वाले हैं—ऐसे शिवानंद गुरु की मैं वन्दना करता हूँ।

पाकान्तकावरजनामजपप्रसक्तं
शोकापनोदनपरायणमाश्रितानाम्

एकान्ततत्त्वपरिचिन्तनपूतचित्तं
राकाशशांकवदनं शिवमाश्रयेऽहम् ॥३७

३७. जो भगवन्नाम के जप में सदा संलग्न रहते हैं, शरणागतों के शोक को ध्वस्त करने वाले हैं, जिनका अन्तःकरण ब्रह्म तत्त्व के चिन्तन से पवित्र हो चुका है, जिनका मुख पूर्ण चन्द्र के समान मनोहर है—ऐसे स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

फुल्लारविन्दवदनं मदनारिभक्त-
मुल्लासशीलमनवद्ययशोविशेषम्
कल्याणरूपमखिलैरभिवन्दनीयं
कल्याशयं शिवमुनिं शरणं प्रपद्ये ॥३८

३८. जिनका मुख स्फुटित कमल के समान सुन्दर है, जो भगवान् शंकर के उपासक हैं, प्रसन्न स्वभाव वाले हैं, जिनकी कीर्ति निष्कलंक है, जो कल्याणस्वरूप हैं, सबके वन्दनीय हैं, शुभाशुभ हैं—ऐसे मुनीन्द्र शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

बालार्कतुल्यमहसं महितप्रभावं
कालारिसेवनरतं करुणार्द्रशीलम्
आलापरञ्जितनं यतिमण्डलेन्द्रं
श्रीलास्यमञ्जुसदनं शिवमाश्रयेऽहम् ॥३९

३९. जो प्रातःकालीन सूर्य के समान तेजस्वी हैं, जिनका प्रभाव प्रशंसनीय है, जो भगवान् की सेवा में सदा निरत रहते हैं, जिनका स्वभाव करुणार्द्र है, अपने

वाग्विलास से जन-रंजन करने वाले हैं, यतिलोक के इन्द्र हैं, लक्ष्मी के नृत्यस्थल हैं, ऐसे स्वामी शिवानन्द की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

भवामयप्रणाशकं नृणां शुभाय सन्ततं
नवायनप्रदर्शकं समस्तलोकसम्मतम्
स्तवार्हदिव्यवैभवं स्वभक्तलोकदैवतम्
शिवाभिधानयोगिनं भजे गुरुं सदैव तम् ॥४०

४०. जो भव-रोग के विनाशक हैं, मानव-कल्याण में सदा तत्पर रहते हैं, नवीन मार्गों के प्रवर्तक हैं, समस्त जनता में मान्य हैं, जिनका दिव्य वैभव स्तुत्य है, जो अपने भक्तजनों के लिये देवतुल्य हैं–उन शिवानन्द योगी गुरु की मै सदैव उपासना करता हूँ।

महितगुणनिधानं त्यक्तनानाभिमानं
विहितविविधकृत्यं सर्वलोकाभिनुत्यम्
अहितरहितमार्यैः पण्डितैश्शिष्यवर्गै
स्सहितमृषिवरेण्यं श्रीशिवानन्दमीडे ॥४१

४१. जो सद्गुणों के आगार हैं, सब प्रकार के अभिमान से रहित हैं, बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्यों के सम्पादक हैं, सब लोगों के प्रणम्य हैं, सदा सर्वभूतहितरत रहते हैं, विद्वान् शिष्यों के साथ निवास करते हैं। ऐसे ऋषिश्रेष्ठ शिवानन्द की मैं स्तुति करता हूँ।

यतिनिवहवरिष्ठं सर्वदा कृत्यनिष्ठं
प्रतिपदमधुरोक्तिं विद्यमानात्मशक्तिम्

प्रतिनिमिषमशेषक्षेमकृत्यैकदक्षं
श्रुतिविदमभिवन्दे श्रीशिवं तापसेन्द्रम् ॥४२

४२. जो संन्यासियों में सर्वश्रेष्ठ हैं, सर्वदा कार्यरत रहते हैं, मधुरभाषी हैं, आत्मशक्ति सम्पन्न हैं, अपने जीवन का प्रत्येक क्षण लोक-क्षेम कार्य में लगाते हैं, वेदों के ज्ञाता हैं, तापसेन्द्र हैं—ऐसे स्वामी शिवानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

रचितविविधपद्यं दर्शिताध्यात्मपद्यं
रुचिररुचिविदीप्तं रञ्जिताशेषलोकम्
सुचिरचरितनानासाधनं ब्रह्मतेजो-
निचिततनुमजस्रं श्रीशिवानन्दमीडे ॥४३

४३. जिन्होंने अनेकों कवितायें रची हैं, जो अध्यात्म-पथ के प्रदर्शक हैं, मधुरीली इच्छाओं के जनक हैं, सभी लोगों के आनन्ददायक हैं, अनेक सुकृतों के करने वाले हैं, ब्रह्मतेज से दीप्तिमान् हैं—ऐसे स्वामी शिवानन्द का मैं रात-दिन स्तवन करता हूँ।

लसन्मन्दहासं स्फुरद्दिव्यभासं
निसर्गाभिरामं निरस्तार्तिजालम्
असल्लोकदुष्प्रापमीशानसेवा-
प्रसक्तं शिवानन्दयोगीन्द्रमीडे ॥४४

४४. जो मनोहारी मन्द मुसकान से सदा शोभायमान हैं, दिव्य आभा से भास्वर हैं, स्वाभाविक रूप से सुन्दर हैं, आर्ति समूह से रहित हैं, पापीजनों के लिये दुष्प्राप्य भगवान्

शंकर की सेवा में संलग्न हैं–ऐसे शिवानन्द योगीन्द्र की मैं स्तुति करता हूँ।

विकाररहितं सदा सकललोकसेवारतं
निकामविमलाशयं विगतलौकिकाशाचयम्
प्रकामविलसन्मुखं निखिलवेदसारोत्कर-
प्रकाशनविचक्षणं शिवमुनीन्द्रमेवाऽश्रये ॥४५

४५. जो सदा निर्विकार हैं, सम्पूर्ण जगत् की सेवा में संलग्न हैं, जिनका मन निर्मल है, जो लौकिक आशा रहित हैं, सस्मित वदन वाले हैं, समस्त वेदों के सार को समझने और समझाने में चतुर हैं–उन शिवानन्द मुनीन्द्र का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

शमद्रविणसंयुतं समविलोकनं सर्वदा
समस्तजनवन्दितं शमलवृन्दनिष्कासकम्
अमन्दधिषणाबलं विषमलोचनाराधना-
क्रमप्रसितमाश्रये शिवमुनिं जगद्देशिकम् ॥४६

४६. शम जिनकी सम्पत्ति है, जिन्हें समदृष्टि है, जो समस्त लोगों से सम्पूजित हैं, पाप समूह को नष्ट करने वाले हैं, जिनकी बुद्धि प्रखर है, त्रिनेत्रधारी भगवान् शिव की उपासना में लगे रहते हैं–ऐसे जगद्गुरु शिवानन्द का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

षडहितरहितं महामुनीन्द्रं
मृडभजनोत्सुकमद्भुतप्रभावम्

गुडसममधुरोक्तिवर्षिणं सद्-
गुरुवरमेव समाश्रये शिवं तम् ॥४७

४७. जो कामादि छः शत्रुओं से रहित हैं, महामुनीन्द्र हैं, भगवान् शंकर की आराधना में निमग्न रहते हैं, जिनका प्रभाव अवर्णनीय है, जो मिश्री के समान मधुरभाषी हैं—ऐसे सद्गुरु स्वामी शिवानन्द का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

सदा समस्तमंगलप्रदानबद्धकङ्कणं
सदाशयाभिनन्दितप्रकृष्टशेमुषीगुणम्
वदान्यमुख्यकीर्तितं मनोज्ञदिव्यभाषणं
मुदाकरं मुनिं शिवं नमामि पुण्यरूपिणम् ॥४८

४८. जो समस्त प्राणियों को सदा मंगल प्रदान करते रहते हैं, जिनकी प्रतिभा अनुपम है, जो अपनी उदारता एवं मधुर भाषण के लिये प्रख्यात हैं, जो आनन्द के आगार हैं—ऐसे पुण्यस्वरूप शिवानन्द मुनि को मैं नमस्कार करता हूँ।

हितकरमखिलानां जीविनां निर्विकारं
मितवचनमुदारं वर्ण्यनानापदानम्
अतनुमहसमीड्यं योगिवर्यं सुशीलं
नतजनपरिवीतं श्रीशिवं भावयेऽहम् ॥४९

४९. जो अखिल प्राणियों के हितैषी हैं, निर्विकार हैं, मितभाषी हैं, उदार हैं, नाना पदों से जिनकी स्तुति की जाती है, जो अमित तेजस्वी हैं, योगियों में श्रेष्ट हैं,

शीलवान् हैं, विनम्र भक्तजन जिन्हें सदा घेरे रहते हैं—उन श्री शिवानन्द की मैं भावना करता हूँ।

कलङ्कवर्जितं समावलोकनं सदा
समस्तलोकमानितं सुमेषुवैरिसेवकम्
अमर्त्यवाहिनीतटे वसन्तमुत्तमौजसं
नमज्जनावृतं भजे शिवं विशिष्टयोगिनम् ॥५०

५०. जो कलंक रहित हैं, जो सबों के प्रति समदृष्टि रखते हैं, समस्त जगत् जिनकी प्रशंसा करता है, जो सुमेषु-वैरि के सेवक हैं, जो सुरसरि के तट पर निवास करते हैं, विनम्र भक्तों से सदा घिरे रहते हैं, उन योगीश्रेष्ठ शिवानंद को मैं भजता हूँ।

क्षन्तव्यो मेऽपराधः सुगुणगणनिधे! श्रीशिवानन्द-
योगिन्!
मन्तव्यं तेऽभिधानं मम भविककरं भातु जिह्वाग्ररंगे
अन्तर्मोदेन नित्यं तव पदपतितं तीव्रसंसारतापा-
क्रान्तं मामार्तलोकावननिरत! सदा पाहि कारुण्यराशे
॥५१॥

५१. हे गुणनिधान योगी शिवानन्द जी! आप मेरे अपराधों को क्षमा कीजिये। आपका नाम मेरे लिये परम कल्याण-कारी है, अतः उसे मैं सदैव जपा करूँ! अपनी मानसिक प्रसन्नता तथा संसार के उग्र तापों से संतप्त मुझको अपने चरणों में पड़ा हुआ देखकर, हे कृपालु, हे दुखियों के रक्षक मेरी रक्षा कीजिये।

नानावर्णविशिष्टपद्यकुसुमप्रोद्दीप्रमालां शुभा-
मेनामद्य समर्पये ननु शिवानन्दांघ्रिपङ्केरुहे
ध्यानावाप्तपरार्ध्यबोधनिकरः श्रीमान् जगद्देशिको
मानातीतगुणाकरः स भगवान् भूयान्मम श्रेयसे ॥५२॥

५२. अनेक विशिष्ट वर्णों से ग्रथित पद्य-रूप कुसुमों से बनाई हुई इस सुन्दर माला को आज मैं अपने सद्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणकमलों में समर्पण करता हूँ। ध्यान बल से समस्त बोध को प्राप्त करने वाले, श्रीमान्. अमित गुणगणों के आकर, षडैश्वर्य सम्पन्न हे मेरे गुरुदेव ! आप सदैव ही इस मालोपहार से मेरे मंगल करने वाले होवें, यही आपके चरणों में मेरी एक प्रार्थना है।

—:०:—



योग-वेदान्त आरण्य एकैडेमी प्रेस, शिवानन्द नगर, यू० पी०